2018

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1 4 0	हिन्दी

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक A - 1088455

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

-	2	8	2	5	3	6	9	7	3

शब्दों में

	दो	आठ	दो	पाँच	तीन	छः	नौ	सात	

[redacted]

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 03 शब्दों में तीन

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 3

ग :– परीक्षा का दिनांक 12 03 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.C C.NO.:252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Smt. Reena Arniya
Reena

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो ग्राम स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

Principal
Govt. H.S. Parichchha
...nari Shivpuri (M.P.)

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

अमित कुमार जैन
वरिष्ठ अध्यापक
शा० उ० मा० वि० ...

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक अंकों में
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

क

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(1) का उत्तर

(1) रागनर फ्रिश

(2) फर्नीचर

(3) अपूर्ण बाजार

(4) सब्जी

(5) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन

प्रश्न -(2) का उत्तर

(i) पूरक

(ii) (बढ़ाया) बढ़ाती है

(iii) संतुलित

(iv) (दृश्य मदों) केवल दृश्य मदों को

(v) निर्यात

4

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 4 के अंक	=	कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(3) का उत्तर

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) ~~असत्य~~ असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

प्रश्न-(4) का उत्तर

(अ)	(ब) उत्तर
(i) इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया	— 1921
(ii) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	— ~~1935~~ 1955
(iii) प्रादिष्ट मुद्रा	— संकटकालीन मुद्रा
(iv) चैक	— ऐच्छिक मुद्रा
(v) प्रतिस्थापन वस्तुऐं	— चाय एवं काफी

BSE

5 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 5 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(5) का उत्तर

(i) आय निर्देशांक

(ii) सापेक्ष माप

(iii) जीवन निर्वाह व्यय सूचकांक से कार्ल मेसन

(iv) आर्थिक विकास (नियन्त्रण)

(v) प्रभावपूर्ण माँग

प्रश्न -(6) का उत्तर

पूर्णतया बेलोचदार माँग –

वह माँग कि स्थिति जिसमें कीमत में तो बहुत अधिक परिवर्तन होता है लेकिन माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते है।

यह माँग एक काल्पनिक माँग है क्योंकि असली जीवन में ऐसा होना सम्भव नहीं है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(7) का उत्तर

राष्ट्रीय आय –

एक देश की 1 वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम ~~मूल्यों~~ ~~का~~ मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय आय है। उस देश की।
राष्ट्रीय आय को जिस विधि से निकाला जाता है उसे राष्ट्रीय आय लेखांकन विधि कहते हैं।
~~प्रश्न~~ –

B
S
E

प्रश्न – (8) का उत्तर (अथवा)

पूर्ण रोजगार

पूर्ण रोजगार से आशय है कि जब देश की श्रम शक्ति तथा उत्पादन शक्ति बराबर होती है अर्थात् जब एक व्यक्ति वर्तमान दरों पर कार्य करने के लिए तैयार होता है व उसे काम मिलता है तो उस स्थिति को पूर्ण रोजगार कहते हैं।

पूर्ण रोजगार = श्रम की क्षमता = उत्पादन क्षमता

7

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(9) का उत्तर (अथवा)

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना अन्य बैंकों का नियमन व नियन्त्रण करने के लिए 1 अप्रैल 1935 को हुई थी तथा 1949 में इसका राष्ट्रीकरण कर दिया गया था।

प्रश्न-(10) का उत्तर

माध्य विचलन की दो विशेषताएँ निम्नलि हैं -

(1) यह अपकिरण की अन्य मापों की अपेक्षा गणना व समझने में सरल है।

(2) यह सभी पदों को समान महत्व देता है। तथा यह न्यादर्शों से भी प्रभावित नहीं होता है।

(3) इसकी गणना अन्य अपकिरणों की मापों की अपेक्षा सरल है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(11) का उत्तर

मॉंग का नियम-

प्रो॰ मार्शल के अनुसार

"यदि अन्य बातें समान रही रहती हैं तो वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी मॉंग कम हो जाती है तथा कीमत कम होने पर मॉंग बढ़ जाती है।"

प्रश्न-(12) का उत्तर

मॉंग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तीन कारक निं॰लि॰ है-

(1) वस्तु की कीमत-

वस्तु की कीमत सबसे अधिक मॉंग को प्रभावित करती है। वस्तु की कीमत बढ़ने पर मॉंग घट जाती है तथा कीमत घटने पर मॉंग बढ़ जाती है।

BSE

(2) उपभोक्ता की आय —

उपभोक्ता की आय भी माँग को प्रभावित करती है। अन्य बातें समान रहने पर उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर माँग बढ़ जाती है तथा आय कम होने पर माँग घट जाती है। यहाँ अन्य बातें समान रहने से आशय उपभोक्ता की रुचि, फैशन आदत से है।

(3) जनसंख्या वृद्धि / कमी —

जनसंख्या वृद्धि या कमी भी माँग को प्रभावित करती है। जैसे किसी देश की जन्म दर ज्यादा हो वहाँ पर बच्चों की संख्या अधिक होगी जिसके कारण खिलौने, बच्चों के कपड़े आदि की माँग बढ़ेगी।

तथा जब किसी देश की मृत्युदर ज्यादा हो वहाँ पर बुजुर्गों की संख्या ज्यादा होने के कारण नजर के चश्मे व छड़ी आदि की माँग बढ़ेगी।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - (9) का उत्तर

निर्देशांक की कोई तीन सीमायें निम्नलि है -

(1) सापेक्ष माप - निर्देशांक केवल परिवर्तन की सापेक्ष माप को ही व्यक्त करते है न कि उस परिवर्तन की वास्तविक माप को बताते है।

(2) माध्यों की सीमायें - निर्देशांक समांतर माध्य, मध्यिका व अन्य रीतियों से बनाये जाते है जिसके कारण इन रीतियाँ का प्रभाव निर्देशांक पर भी पड़ता है।

(3) अव्यवहारिक - निर्देशांक अव्यवहारिक होते है क्योंकि यह समग्र के कुछ संमको को चुनकर बनाये जाते है। इसलिए निर्देशांको को अव्यवहारिक कहना उचित है।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न-(15) का उत्तर

विस्तार के कोई तीन गुण निम्न प्रकार से है-

(1) यह गणना करने में बहुत सरल है।

(2) इनकी गणना करने के लिए गणित के विशेष की आवश्यकता है नहीं होती है।

(3) यह न्यादर्शों से प्रभावित नहीं होते है। व सामान्य व्यक्ति भी इसकी गणना कर सकता है।

प्रश्न-(16) का उत्तर (अथवा)

'एकाधिकार' की कोई चार विशेषताएं निम्नलि है-

(1) एक विक्रेता- एकाधिकार में वस्तु का केवल एक ही विक्रेता होता है व उसका वस्तु की पूर्ति पर पूरा नियंत्रण रहता है।

(2) स्थापन्न वस्तुओं का अभाव - एकाधिकार बाजार में एकाधिकारी की वस्तु

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

के निकट स्थापन्न वस्तु का अभाव पाया जाता है।

(3) पूर्ति पर नियंत्रण –

एकाधिकार बाजार में वस्तु का विक्रेता वस्तु पर पूरा नियंत्रण रखता है। तथा वह अकेले ही वस्तु की पूर्ति को प्रभावित कर सकता है।

(4) कीमत विभेद –

एकाधिकार बाजार में वस्तु के विक्रेता का वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होने के कारण वह वस्तु को अधिक पर भी बेचता है। अतः कीमत विभेद संभव है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न-(15) का उत्तर (अथवा)

व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर नि॰लि॰ है -

व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1) व्यष्टि अर्थशास्त्र में छोटे-छोटे भागों का अध्ययन किया जाता है।	1) समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण का योग का अध्ययन करती है।
2) व्यष्टि अर्थशास्त्र के द्वारा एक व्यक्ति की आर्थिक नीति बनाई जा सकती है।	2) समष्टि अर्थशास्त्र द्वारा सम्पूर्ण समाज की नीति बनाई जा सकती है।
3) व्यष्टि अर्थशास्त्र एक व्यक्ति विशेष के लिए या एक विशेष के लिए मददगार है।	3) समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण समाज व राष्ट्रीय आय, मौद्रिक नीति के लिए विशेष मददगार है।
4) व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य "कीमत यन्त्र" होता है।	4) समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य "राष्ट्रीय आय" व रोजगार नीति आदि होती है।

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(17) का उत्तर

एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक गुण निम्नलि है -

(1) सुपरिचयता - एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक है कि उसे जनसाधारण आदि पहचान सके नहीं तो जाली मुद्रा का भय बना रहेगा।

(2) टिकाऊपन - एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक है कि उसमे टिकाऊपन का गुण होना चाहिए। अर्थात् एक बार जिस मुद्रा का निर्गमन कर दिया जाये उसका वर्षों तक प्रयोग होना चाहिए।

(3) वहनीयता - एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक होता है कि उसमे वहनीयता का गुण होना चाहिए अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान ले जा सकना सम्भव हो।

(4) सुविधाजनक - एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक है कि उसमें सुविधाजनकता का

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

गुण होना चाहिए। जिससे जनता विरोध की परेशानी मुद्रा को कर सके।

प्रश्न-(8) का उत्तर

भारत में भुगतान संतुलन की प्रतिकूलता के प्रमुख कारण नि॰लि॰ है—

(1) पट्रोलियम पदार्थों की मात्रा में वृद्धि—

भारत में गत वर्षों मे पट्रोलियम व पट्रोलियम पदार्थों की मांग मे बहुत अधिक वृद्धि हुई है तथा तेल निर्यातक देश प्रतिवर्ष तेलों व पेट्रोल की कीमत मे वृद्धि कर देते है जो भुगतान संतुलन मे प्रतिकूलता का कारण है।

(2) मशीनों व पूँजीगत सामान—

भारत में आर्थिक नियोजन के कारण कृषि व उद्योगों के लिए भारी व हल्के मशीनों का बहुयातायात मे आयात किया जाता है जो भुगतान असंतुलन का कारण है।

16 [ ] + [ ] = [ ]

योग पृष्ठ

प्रश्न क्र.

(3) आशा अनुसार निर्यातों में वृद्धि नहीं :-

भारत में जिस आशा के अनुसार में वृद्धि करने के प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन निर्यात उस अनुपात में नहीं बढ़ पा रहे।

(4) जनसंख्या वृद्धि :-

भारत में जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ रही जिसके कारण निर्यातों का अधिकांश जनसंख्या के भरण-पोषण पर ही चला जाता है जो भुगतान असंतुलन का एक प्रमुख कारण है।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(19) का उत्तर

एक अच्छी कर प्रणाली की विशेषताएँ निं.लि. है -

(1) करारोपण के सिद्धान्तों के अनुरूप -

एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता यह होती है कि वह करारोपण के सिद्धान्तों पर जैसे सुविधा का सिद्धान्त, निश्चितता का सिद्धान्त, उत्पादकता का सिद्धान्त के अनुरूप हो।

(2) सुविधाजनक -

एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता है कि वह सुविधाजनक होनी चाहिए अर्थात् व्यक्तियों को कर भार के स्वरूप न लगे तथा व्यक्तियों से कर उस समय वसूले जाये जब उन्हें कर देने में असुविधा न हो।

जैसे - किसान से कर जब लिया जाये जब उसकी फसल कटती है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) निश्चितता का होना -

एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता यह होती है कि उनमे कर की दर निश्चित होनी चाहिए तथा व्यक्तियों को पता होना चाहिए की उन्हें कितना त्याग करना है।

(4) मितव्ययिता का होना -

एक अच्छी प्रणाली की एक विशेषता मितव्ययिता की होती है अर्थात व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले त्याग की तुलना मे उसे लाभ अधिक प्राप्त होना है।

कर प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें करों को एक करने में व्यय कम व आय अधिक प्राप्त हो।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(20) का उत्तर

अपकिरण — अपकिरण के द्वारा पदों के बीच पाई जानी वाली विचरणशीलता का अध्ययन किया जाता है।

प्रो बाऊले के अनुसार

"पदों के विचरण का माप ही अपकिरण है।"

अपकिरण के उद्देश्य नि॰लि है—

(1) पदों की विचरणशीलता की तुलना करना—

अपकिरण के द्वारा पदों दो या दो से अधिक पदों के बीच पायी जाने वाली विचरणशीलता का अध्ययन किया जाता है।

(2) बिखराव व फैलाव का अध्ययन—

अपकिरण के द्वारा माध्य के ऊपर व नीचे पाये जा जाने वाली वाले पदों का अध्ययन किया जाता है। तथा पदों की विचरणशीलता को नियंत्रित किया जाता है।

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

(3) एकरूपता का अध्ययन -

अपकिरण के द्वारा समूह में पायी जाने वाली एकरूपता का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न -(21) का उत्तर (अथवा)

सहसंबंध - दो चरों के मध्य पाये जाने गुणात्मक सम्बन्धों को ही सहसम्बन्ध कहते हैं।

या

एक चर मूल्य में परिवर्तन का दूसरे चर मूल्य पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन करना सहसम्बन्ध कहलाता है।

धनात्मक सहसंबंध -

जब दो चरों में परिवर्तन की दिशा समान होती है तो उसे धनात्मक सहसम्बन्ध कहते है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

अर्थात् एक चरमूल्य में वृद्धि या कमी होने पर दूसरे चर मूल्य में वृद्धि या कमी हो जाती है तो उसे धनात्मक सहसम्बन्ध कहते है।

उदाहरण - पूर्ति व कीमत में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

प्रश्न - 22 का उत्तर

माँग की लोच को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलि है-

(1) वस्तु का स्वभाव - वस्तु का स्वभाव भी माँग की लोच को प्रभावित करता है। अनिवार्य वस्तुओं की माँग कीमत मे परिवर्तन होने पर भी अप्रभावित होती है। अनिवार्य वस्तुओ की माँग बेलोचदार होती है जैसे - गेहूं, चावल, दालें आदि।

तथा विलासिता से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं की माँग लोचदार होती है। क्योंकि इनकी कीमत बढ़ने पर उनकी इनकी माँग घट जाती है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2) वस्तु का प्रभाव -

माँग की लोच पर वस्तु के प्रयोग का भी प्रभाव पड़ता है।
सामान्यतः जिन वस्तुओं का प्रयोग कार्यों में किया जाता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है।

जैसे - बिजली का प्रयोग रसोई, ईंधन, टी.वी., फ्रिज, रेडियो, टेलीफोन पानी गर्म करने में किया जाता है। जब बिजली की कीमतों थोड़ा सा भी परिवर्तन होता है या वृद्धि होती है तो लोगो द्वारा केवल जरूरी कार्यों ही इसका प्रयोग किया जाये।

इस प्रकार इन वस्तुओं की माँग की लोच जिनका प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है।

(3) उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति -

माँग की लोच पर उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,M

क्र.

सामान्य रूप से गरीबो के लिए माँग की अत्यधिक लोचदार होती है तथा अमीरो के लिए माँग की लोच बेलोचदार होती है।

(4) भविष्य में स्थगित करने की ~~सम्भावना~~ सम्भावना –

जिन वस्तुओं के प्रयोग को भविष्य के लिए स्थगित किया जा सकता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है जैसे – जूते, हाते, हिटर आदि इन वस्तुओं के बिना भी लोग अपना काम चला लेंगे।

इसके विपरीत जिन वस्तुओं के उपभोग को स्थगित नहीं किया जा सकता है उनकी माँग की लोच बेलोचदार होती है। जैसे – गेहूँ, चावल, नमक आदि।

(5) संयुक्त माँग –

जिन वस्तुओं की माँग की ~~म~~ साथ-साथ की जाती है उन्हे संयुक्त माँग वाली वस्तुयें या पूरक वस्तुएं कहते है इनकी माँग बेलोचदार होती है।

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 24 के अंक	=	कुल
16		33.91		

MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH

क्योंकि एक के मूल्य में वृद्धि/कमी दूसरे के मूल्य मे कमी/वृद्धि कर देता है।

जैसे - कार व पेट्रोल पूरक वस्तुऐं है यदि कार की कीमत बढ़ जाती है तो पेट्रोल की मांग कोई नहीं करेगा। अर्थात पेट्रोल की मांग कम हो जायेगी।

प्रश्न-(23) का उत्तर

भारत में राष्ट्रीय आय के धीमी गति से वृद्धि के प्रमुख कारण निं लि है -

(1) प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग न कर पाना -

भारत मे राष्ट्रीय आय में कमी का एक कारण प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया जा रहा है जिसके कारण राष्ट्रीय आय कम रह जाती है।

(25)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
अर्थशास्त्र	1 4 0	हिन्दी	12 3 18

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC ... 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Smt Reena Athiya

Reena

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक 24 से 28 तक कुल प्राप्तांक ☐ + ☐ ☐

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mm

(2) अपर्याप्त औद्योगिक —

भारत में आज भी भारी तथा पूंजीगत भी कमी है तथा आवश्यकता के अनुसार औद्योगिक विकास नहीं हुआ है। जिसके कारण राष्ट्रीय आय कम रह जाती है।

(3) जनसंख्या वृद्धि —

भारत में जनसंख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही जहाँ 1951 में देश की जनसंख्या 36.1 करोड़ थी वहीं 2011 में देश की जनसंख्या 121,569573 करोड़ हो गयी। जनसंख्या की इतनी तेजी से बढ़ने के कारण अधिकांश

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E

अनवरत ...

साधन देश की जनसंख्या के भरण-पोषण मे लग जाते है जिसके कारण राष्ट्रीय कम रह जाती है।

(4) औद्योगिक क्षेत्रों द्वारा अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग न कर पाना -

भारत में आज भी आधुनिक मशीनों व कुशल श्रम शक्ति के अभाव के कारण उद्योग अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नही कर पाते है जिसके कारण राष्ट्रीय आय कम रह जाती है।

(5) कृषि पर निर्भरता -

भारत मे आज भी राष्ट्रीय आय का लगभग 19% कृषि से प्राप्त होती है भारतीय कृषि मानसून का जुआ कही जाती है तथा कृषि को आज भी भारतीय कृषक परम्परागत रीतियो से करते है जिसके कारण उत्पादन कम होता है तथा राष्ट्रीय आय मे वृद्धि धीमी गति से होती है।

प्रश्न-(24) का उत्तर (अथवा)

न्यून (अभावी) माँग के प्रमुख कारण व परिभाषा निम्नलिखित हैं-

"अभावी माँग से आशय जब कुल माँग कुल पूर्ति से कम होती है तो उसे अभावी माँग कहते हैं। इस स्थिति में अनैच्छिक बेरोजगारी फैलती है।"

अभावी माँग के कारण निम्नलिखित हैं-

(1) सार्वजनिक व्यय में कमी-

जब सरकार देश के सार्वजनिक व्यय में कमी करती है तो अर्थव्यवस्था को मुद्रा कम प्राप्त होती है तथा माँग भी कम हो जाती है।

(2) मुद्रा की मात्रा में कमी-

जब की सरकार वर्तमान मुद्रा की मात्रा में कमी करती है तब अभावी माँग की स्थिति उत्पन्न होती है।

(3) ब्याज दरों में वृद्धि -

जब केन्द्रीय बैंक द्वारा ब्याज दरों मे परिवर्तन कर उन्हे बढा दिया जाता है तो इससे साख की मात्रा घट जाती है। ऋण प्रक्रिया जटिल हो जाती है जिससे मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है।

(4) करों में वृद्धि -

जब देश की सरकार वर्तमान करों मे वृद्धि तथा नई कर जनता पर लगाती है तो इससे लोगो की क्रयशक्ति व मांग घट जाती है। जिससे सामूहिक मांग कम हो जाती है।

(5) केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण

जब देश की केन्द्रीय द्वारा साख नियन्त्रण किया जाता है तो इससे इससे सामूहिक मांग कम हो जाती है

(29)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय: अर्थशास्त्र | विषय कोड: 1 4 0 | परीक्षा का माध्यम: हिंदी | परीक्षा का दिनांक: 12 | 3 | 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: H.S.S.C. C.NO.-252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Smt. Reena Athiya (Reena)

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक 24 से 22 तक कुल प्राप्तांक

तथा बेरोजगारी व आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाती है।

केन्द्रीय बैंक द्वारा साख पर नियन्त्रण व न्यूनतम कोषानुपात प्रणाली में परिवर्तन, ब्याज दरों में परिवर्तन करके व साख को निर्धारित द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

B
S
E

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-(25) का उत्तर

बजट - बजट से आशय है कि एक वर्ष मे सरकार के आय व्यय के समायोजन सम्बन्धित होता है।

"सरकार का बजट एक वर्ष मे सरकार की आय-व्यय के वित्तीय समायोजन से सम्बन्धित होता है।"

बजट के प्रमुख उद्देश्य निम्नलि हैं-

(1) आर्थिक स्थिरता सुदृढ़ता -

बजट का उद्देश्य होता है कि देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करना होता है। जिससे आंतरिक व बाह्य बाहरी समस्याओ का देश पर कोई प्रभाव न पड़े।

(2) आर्थिक विकास-

बजट का उद्देश्य होता है कि देश

सुदृढ़ता

का हर क्षेत्र जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, औद्योगिक, आदि स्तरों का विकास बजट का मुख्य उद्देश्य होता है।

(3) औद्योगिक विकास -

बजट का एक यह भी उद्देश्य यह भी होता है कि देश का औद्योगिक विकास करना इसलिए बजट अल्पकालिक व दीर्घकालिक विनियोगों द्वारा औद्योगिक विकास बढ़ाने के प्रयास किया जाते है।

(4) कृषि विकास -

बजट मे कृषि से सम्बन्धित वस्तुओं का मूल्य भी निश्चित होता है तथा बजट मे कृषि से सम्बन्धित सभी वस्तुओ के का विवरण कर उनके विकास के प्रावधान होते है।

(5) रोजगार -

बजट में सार्वजनिक निर्माण कार्य तथा

सार्वजनिक विनियोगो को बढ़ाकर भी रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के प्रावधान किये जाते है।

प्रश्न-(26) का उत्तर (अथवा)

निर्देशांको की प्रमुख पांच विशेषताऐं नि०लि० है-

(1) संख्या द्वारा व्यक्त - निर्देशांक को हमेशा संख्या द्वारा ही व्यक्त किया जाता है। निर्देशांको में परिवर्तन की दिशा को शब्दों के स्थान पर संख्यों में व्यक्त किया जाता है।

(2) सापेक्ष माप - निर्देशांक द्वारा समंको को सापेक्ष रूप मे ही मापा जाता है। क्योंकि निरपेक्ष रूप मे तुलना योग्य नहीं होते है। इसलिए निर्देशांक हमेशा समंको के परिवर्तन को सापेक्ष रूप मे ही मापता है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय: अर्थशास्त्र

विषय कोड: 1 4 0

परीक्षा का माध्यम: हिंदी

परीक्षा का दिनांक: 12 3 18

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: HSSC C.NO.: 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Smt. Reena Athiya

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक 24 ... तक कुल प्राप्तांक + — =

(3) परिवर्तन का आधार -

निर्देशांकों की गणना मुख्यतयाः दो आधार पर की जाती है

(1) समय
(2) स्थान

समय के आधार पर गणना करते समय विशेष अवधि, समय, पहर, दिन, महीना, साल आदि को आधार माना जाता है।

स्थान को आधार मानते है समय किसी भू भाग को आधार मानकर परिवर्तन को मापो जाता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

सामान्यतः समय को ही आधार माना जाता है।

(4) औसत प्रवृत्ति –

निर्देशांक परिवर्तन की दिशा को औसत रूप मे व्यक्त कर करते है।
औसत मुख्य रूप से समांतर, माध्यिका आदि की सहायता से निकाली जाती है।
निर्देशांक किसी विशेष समंक की व्याख्या न समग्र समंको की व्याख्या करते है।

(5) माध्य विशेष का अध्ययन –

निर्देशांक के सम्बन्ध मे प्रो. बाउले ने कहा है कि

" निर्देशांक एक विशेष प्रकार के माध्य होते है"

निर्देशांक में माध्य अनेक विधियों के निकाला जाता है।
निर्देशांको में माध्यों का अध्ययन व विवरण किया जाता है।

(6) व्यापकता -

निर्देशांको की एक अन्य विशेषता व्यापकता है इसमें सभी समंको का अध्ययन व्यापकता व विश्लेषता से किया जाता है।

जैसे श्रमिक से सम्बन्धित निर्देशांक श्रमिको से सम्बन्धित सभी प्रकार वस्तुओ का व्यापकता से साथ किया जाता है।

END